



## सिक्खों की शासन व्यवस्था: विशेष सन्दर्भ बाबा बंदा सिंह बहादुर

निताशा जून,

सहायक प्रोफ़ैसर, इतिहास

द्रोणाचार्य, राजकीय महाविद्यालय, गुरुग्राम

तथा

डा. अतुल यादव,

सहायक प्रोफ़ैसर, इतिहास

राजकीय महाविद्यालय, अम्बाला छावनी

बंदा सिंह बहादुर का जन्म 27 अक्टूबर 1670 को राजौरी (अब जम्मू और कश्मीर में) में एक हिंदू परिवार में किसान रामदेव के घर लछमन देव के रूप में हुआ था। स्रोत विभिन्न स्रोतों से उनके पिता को भारद्वाज वंश के राजपूत के रूप में वर्णित किया गया है बंदा सिंह का परिवार काफी गरीब था। उनके प्रारंभिक जीवन के बारे में इस तथ्य के अलावा ज्यादा जानकारी नहीं है कि बंदा सिंह को शिकार और निशाने बाजी का शौक था और उन्होंने कम उम्र में ही घुड़सवारी, कुश्ती, तीरंदाजी और तलवार बाजी की कला सीख ली थी। बंदा सिंह के प्रारंभिक जीवन के बारे में एक कहानी के अनुसार वह 15 साल की उम्र में एक बार शिकार कर रहे थे। हिरणी को मरते हुए देखकर बंदा सिंह दुखी हो गए। उसे तब भी बहुत दुख हुआ जब उसने हिरणी को काटा और देखा कि हिरणी के दो बच्चे मर रहे थे जो अभी पैदा नहीं हुए थे। इस घटना से उन्हें गहरा सदमा लगा और बंदा सिंह को सांसारिक मामलों को छोड़कर संन्यासी बन जाना पड़ा। वह जानकी प्रसाद नामक एक साथी संन्यासी के संपर्क में आये। प्रसाद ने बंदा सिंह का नाम, जो उस समय लछमन देव था, बदलकर माधोदास कर दिया। बंदा सिंह ने अपना खुद का डेरा स्थापित किया और कुछ लोगों को

अपने साथ ले लिया। 1708 में गुरु गोबिंद सिंह माधोदास के समय बंदा सिंह के मठ में गये। गुरु गोबिंद सिंह बंदा सिंह की गद्दी पर बैठे जहाँ बंदा एक संत के रूप में बैठते थे। कुछ स्रोतों के अनुसार गुरु गोबिंद सिंह ने वहाँ बकरियों को भी मारा था। जो कुछ हुआ उसे सुनकर बंदा सिंह क्रोध से भर गये। बंदा सिंह ने गुरु जिस कुर्सी पर बैठे थे उसे पलटने के लिए अपने “जादू” का इस्तेमाल किया, लेकिन कुछ नहीं हुआ। क्रोध से भरकर बंदा सिंह गुरु के पास गये। गुरु को देखकर बंदा सिंह का क्रोध पिघल गया। गुरु से बातचीत के बाद बंदा सिंह ने धर्म परिवर्तन किया और खालसा बनकर अमृत ग्रहण किया। माधोदास को गुरु ने बंदा सिंह नाम दिया था। बंदा सिंह को गुरबानी और सिख इतिहास पढ़ाया गया। 1 कहा जाता है कि जोरावर सिंह और फतेह सिंह की हत्या की खबर पाकर बंदा सिंह रोने लगे। गुरु गोबिंद सिंह ने बंदा सिंह से कहा, “जब अत्याचार लोगों पर हावी हो गया था, तो यह अधिक संवेदनशील लोगों का कर्तव्य था कि वे इस के खिलाफ लड़ें और यहां तक कि संघर्ष में अपनी जान भी दे दें”। बंदा सिंह ऐसा ही करना चाहते थे। बंदा सिंह अत्याचारियों को दंडित करने और आम लोगों को बचाने की गुरु गोबिंद सिंह की इच्छा को पूरा करना चाहते थे। 2

बंदा सिंह बहादुर ने समाज में हीन माने जाने वाले लोगों को अपने गाँव, कस्बे और क्षेत्रों में शासक नियुक्त किया। समकालीन इतिहासकार मुहम्मद शफी वारिद के अनुसार, “वजीर खान के वध के बाद, उन्होंने हिंदुओं और मुसलमानों के लिए निर्धारित किया, जो भी उनके सिखों में नामांकित हो गए, एक शरीर के होने चाहिए और उनका भोजन एक साथ होना चाहिए ताकि सम्मान के बीच अंतर हो सके। नीच और अच्छे जन्म को पूरी तरह से हटा दिया गया था और सभी ने एक साथ अभिनय करते हुए आपसी एकता हासिल की थी। मल की सफाई करने वाला कर्मी एक बड़े रुतबे वाले राजा के साथ बैठा था, और उन्हें एक-दूसरे से कोई दुश्मनी महसूस नहीं हुई।” 3

इस विषय में, विलियम इरविन लिखते हैं कि "सिखों के कब्जे वाले सभी परगनों में, पिछले रीति-रिवाजों का पूर्ण रूप से उल्ट फेर कर दिया गया। एक निम्न मैला ढोने वाला या चर्मकार, जिसे भारतीय अनुमान में सबसे नीचा समझा जाता था, उसे केवल अपना घर छोड़कर गुरु (बंदा सिंह) के साथ शामिल होना था, जब थोड़े समय बाद वह वापस अपने जन्मस्थान पर जाता था तो अपने हाथ में नियुक्ति के आदेश के साथ एक शासक के रूप में वापस आता था। जैसे ही उन्होंने अपने क्षेत्र की सीमाओं के भीतर पैर रखा, अच्छे-अच्छे और धनी लोग उनका अभिवादन करने के लिए निकल पड़े और उन्हें उनके घर ले गए। वहां पहुँचन पर सभी कलीन उनके सामने हाथ जोड़कर खड़े हो गए, उनके आदेशों की प्रतीक्षा कर रहे थे।" 4

इस तरह सदियों से चली आ रही सामाजिक संरचना में बदलाव के कारण इन वर्गों के लोग बड़ी संख्या में बंदा सिंह बहादुर से जुड़ने लगे। जिस से सिख क्रांति को स्थानीय स्तर पर काफी समर्थन और शक्ति प्राप्त हुई। इस संबंध में गुरुबख्श सिंह का कहना है कि "जातिगत पूर्वाग्रहों से पैदा हुई सामाजिक असमानताओं को कठोरता से खत्म करना था। बंदा ने सामाजिक समानता को बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठाए थे। न केवल पंजाब के लोगो उसके साथ जुड़े बल्कि बाहरी क्षेत्रों से भी तत्कालीन निचली जाति के हिंदू बड़ी संख्या में स्वेच्छा से उसके साथ जुड़ गए थे और उसकी सेना की संख्या बढ़ा दी थी।" 5

गुलाम मुही-उद-दीन ने इन निम्न जाति के हिंदुओं को "खास-खशक-ए-हामिद-ए-जहानुमी-वजूद यानी नारकीय हिंदुओं के समाज का निम्नतर हिस्सा और आफत-ए-असमानी यानी स्वर्ग से आयी विपत्ति बताया है।" 6 लेकिन कुछ इतिहासकारों का मानना है कि खालसा द्वारा सामाजिक संरचना में बदलाव के कारण ऐसा निम्नवर्ग उभरा जिसने उस समय के उच्चवर्ग के लिए एक चुनौती पेश की और इससे समाज में एक वर्ग संघर्ष पैदा हो गया। इस उभरते हुए सामाजिक वर्ग में जाट प्रमुख थे। मुजफ्फर आलम के अनुसार, "जब यह अपेक्षाकृत निम्नस्तर का समुदाय उच्च सामाजिक स्थिति के दावे



के लिए संघर्ष करता था, तो हिंसा और संघर्ष के मामलों में उनका पहला लक्ष्य न केवल शासक थे बल्कि मौजूदा सत्ता संरचना के लाभार्थी भी थे। भूमि संबंधों में पारंपरिक रूप से जिनका रुतबा ऊंचा था, जैसे कि राजपूत और रंगहार और जिन्हें मुगलों ने इस क्षेत्र में जमींदारों के रूप में उभरने का समर्थन किया था, उन्हें बढ़ते जाटों के दुश्मन के रूप में पहचाना गया।<sup>7</sup>

सिख आंदोलन में जाटों की भूमिका को मुजफ्फर आलम ने इसकी एक कमजोरी बताया है। वह लिखते हैं, “जाट सिख जमींदारों के आंदोलन के प्रमुख समर्थन ने धीरे-धीरे इसे गैर-सिख, गैर-जाट जमींदारों और शायद रियाया के साथ-साथ खत्रियों सहित कुछ अनबन समुदायों से भी अलग कर दिया, जो अन्यथा अभी भी गुरु के अनुयायी थे। नानक (नानक-परस्त)।”<sup>8</sup> लेकिन मुजफ्फर आलम ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि अगर बंदा सिंह बहादुर को समाज के सभी वर्गों का समर्थन नहीं मिला होता तो वह शक्तिशाली मुगल साम्राज्य के खिलाफ इतना व्यापक आंदोलन खड़ा नहीं कर पाते। केवल मुगल साम्राज्य पर निर्भर लाभार्थी, स्थानीय भ्रष्ट अधिकारी उसके खिलाफ थे। सुरेंद्र सिंह के अनुसार, “सिख आंदोलन ने जाति समाज के बाहर एक समाज का निर्माण किया। यह एकमात्र जन आंदोलन था जो भारत में उत्पन्न हुआ और मानवतावादी उद्देश्य के लिए राजनीतिक सत्ता पर कब्जा करने का प्रयास किया।”<sup>9</sup>

बंदा सिंह ने कभी भी मुसलमानों को धार्मिक आधार पर नहीं सताया। परिणामस्वरूप, हिंदुओं और सिखों के साथ-साथ बड़ी संख्या में मुसलमान भी उनके समर्थक थे और उनके रैंको में नियुक्त किए गए थे। सुख दयाल सिंह के अनुसार, “बंदा सिंह बहादुर एक महान क्रांतिकारी थे जिन्होंने जाति, पंथ और रंग की बाधाओं को तोड़ दिया। वह एक सच्चे सिख थे, लेकिन धार्मिक कट्टर नहीं थे। उन्होंने कभी भी अपने धर्म युद्ध को धार्मिक युद्ध में नहीं बदला। हालाँकि उनके विरोधी, मुगलअधिकारी, अक्सर उनकी लड़ाई को जेहाद में बदल देते

थे। बटाला परगना के मौलवियों ने उसके खिलाफ एक धार्मिक युद्ध छेड़ा लेकिन उसने ऐसा नहीं किया।<sup>10</sup>

सिक्खों की धर्मनिरपेक्षता की नीति के बारे में समकालीन सूत्रों ने भी लिखा है। 28 अप्रैल 1711 को अकबर-ए-दरबार-ए-मौला में दर्ज जानकारी के अनुसार, “विद्रोही नानक उपासक (बंदा सिंह) 26 अप्रैल तक कलानौर में डेरा डाले हुए थे। उन्होंने एक वचन दिया था और मुसलमानों को परेशान न करने का संकल्प व्यक्त किया था। इसलिए, उनके साथ शामिल होने वाले सभी मुसलमानों को दैनिक भत्ता और मजदूरी दी जाती थी और उनकी उचित देखभाल की जाती थी। उसने उन्हें खुतबा पढ़ने और नमाज अदा करने की अनुमति दी थी। इस प्रकार पांच हजार मुसलमान विद्रोही सिख नेता की सेवा में शामिल हो गए थे। अजान (प्रार्थना की पुकार) और नमाज (दैनिक प्रार्थना) की स्वतंत्रता के साथ ये मुसलमान विद्रोहियों (सिखों) की सेना में सहज महसूस कर रहे थे।<sup>11</sup>

15 फरवरी 1711 को अखबार-ए-दरबार-मौला में यह दर्ज किया गया था कि, “सिख नेता को लगता है कि कुछ मुसलमानों के बीच भी उनके अनुयायी थे। कहा जाता है कि 15 फरवरी 1711 को, एक पीर मुहम्मदभट्टी, संभवतः जालंधर दोआब के विद्रोही भट्टियों के सदस्य थे, ने अदालत में ‘वाहेगुरु वाहेगुरु’ के नारे लगाये।<sup>12</sup>

अमीन-उद-दौला अपने तीसरे रूक्का में कहना हैं कि, “उसने अपने झुकाव के प्रति सभी के दिलों को मोहित कर लिया और चाहे कोई हिंदू हो या मुसलमान, जो भी उसके संपर्क में आया, उसने उसे सिंह की उपाधि से संबोधित किया (सिख धर्म में शामिल किया)। तदनुसार सरहिंद के पड़ोस के एक शासक दीनदार खान, उस जगह के एक समाचार-लेखक मीर नासिर-उद-दीन और अमृतसर के पास पंजवार के एक जाट छज्जू को दीनदार सिंह, मीरना सिर सिंह और छज्जा सिंह में परिवर्तित कर दिया गया था। और बड़ी संख्या में मुसलमानों और हिंदुओं ने सिखों के विश्वास और शिष्टाचार को अपनाया और उनके साथ खड़े होने की गंभीर शपथ और दृढ़ प्रतिज्ञा ली।<sup>13</sup>

बंदा सिंह के नेतृत्व में सिख आंदोलन के बारे में हरजिंदर सिंह कहते हैं कि "सिख युद्ध किसी व्यक्ति, धर्म या पंथ के खिलाफ नहीं था। यह अन्याय, क्रूरता और अमानवीयता के खिलाफ था। इसलिए बंदा सिंह ने किसी मुस्लिम मजार, मस्जिद, मजार, मजार या कब्र को नष्ट नहीं किया। अगर सिख इस्लाम विरोधी होते तो कम से कम उन कट्टर मुसलमानों के स्मारकों को तोड़ देते जो गुरुओं और सिखों के खिलाफ क्रूरता का कारण थे।"14

बंदा सिंह बहादुर ने सामाजिक और धार्मिक समानता के साथ-साथ विजित क्षेत्रों में मुगलों की शोषक भू-राजस्व व्यवस्था को भी बदल दिया। उसने विजित एरेंस से अत्याचारी और भ्रष्ट जमींदारों से जमीन का मालिकाना हक छीन लिया और उस पर खेती करने वाले काश्तकारों को जमीन का असली मालिक बना दिया। इन जमींदारों के बारे में, गंडा सिंह कहते हैं, "ये जमींदार या जमींदार, जो ज्यादातर मामलों में उच्च सरकारी अधिकारी थे, अपने आपमें निरंकुश राजा से अधिक थे, व्यावहारिक रूप से किसी उच्च अधिकारी के प्रति उत्तरदायी नहीं थे। अधिकारियों ने स्वयं अपने आंतरिक प्रबंधन में तब तक हस्तक्षेप नहीं किया जब तक कि उन्होंने अपने निश्चित अंशदान में भुगतान किया, चाहे कितना भी, कितना या किस आधार पर उन्होंने भूमि के वास्तविक काश्तकारों से अपनी वसूली का एहसास किया, जो व्यावहारिक रूप से निम्न स्थिति में थे। मात्र गुलाम।"15

9 जनवरी, 1711 को मुगल दरबार के अखबार अखबार-ए-दरबार-ए-मौला में सिखों द्वारा मुगलों की राजस्व व्यवस्था में किए गए परिवर्तनों की जानकारी दी गई है। इस रिपोर्ट के अनुसार, "गाँवों में वेबटाई प्रथा का पालन करते थे। वे उपज का दो भाग किसानों को देते थे और एक भाग अपने पास रख लेते थे। इन शर्तों पर जमीन किसानों को दी गई थी।"16

हरजिंदर सिंह दिलगीर सिखों की भू-राजस्व प्रणाली के बारे में कहते हैं, "सरहिंद के प्रशासन और बुनियादी ढांचे पर नियंत्रण करने के बाद, बंदा सिंह बहादुर ने 27 मई 1710 को एक सार्वजनिक दरबार (अदालत) आयोजित किया। इस खुली सभा में उन्होंने घोषणा की कि सिख शासन 'लोगों का शासन' होगा, भूमि उनकी होगी जो इसे जोतते हैं कोई भी किसी

जमींदार का गुलाम या मजदूर नहीं होगा। सभी किसान अपनी फसल का एक तिहाई सिख राज्य के खजाने में योगदान करेंगे (वजीर खान के अधीन यह फसल का आधा था)। बंदा सिंह ने घोषणा की और सामंती व्यवस्था को समाप्त किया। "17

### संदर्भ ग्रंथ सूची

1. **डी. एस सगू वीएसएम, सिखों की युद्ध रणनीति और युद्धाभ्यास**, नई दिल्ली, 2001 पृष्ठ संख्या 115–117.
2. राजपाल सिंह, बंदा बहादुर एंड हिज टाइम्स, हरमन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1998, पृष्ठ संख्या 15–17.
3. इरफान हबीब, बंदा बहादुर एंड हिजफोलोवर्स फ्राम मुहम्मद शफी वारिद, मुरात-ए-वारीदत, जेएस ग्रेवाल और इरफान हबीब द्वारा संपादित, सिख हिस्ट्री प्रशियन सोर्सेज, इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस, 2001, पृष्ठ संख्या। 161.
4. विलियमइरविन, द लैटरमुगल, लाप्राइसपब्लिकेशन, दिल्ली, 2011, पेज नं. 98–99.
5. गुरबख्शा सिंह, फुतुहत न आह-ए-समादी: आन दी नेचर आफ सिख रिवोल्ट अंडर बंदा सिंह बहादुर, सुखदयाल सिंह द्वारा संपादित, बंदा सिंह बहादुर आन दी कैनवास आफ सिख हिस्ट्री, गुरमत प्रकाशन, पटियाला, 2005, पृष्ठ संख्या। 47.
6. वही। पृष्ठ सं। 47–48.
7. मुजफ्फर आलम, द क्राइसिस ऑफ एम्पायर इन मुगलनॉर्थ इंडिया: अवध एंड द पंजाब, 1707–48, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, बॉम्बे, 1986, पेज नं। 144–45।
8. वही। पृष्ठ सं। 147.
9. सुरेंद्र सिंह, डिस्कवरिंग बंदा सिंह बहादुर...पेज नं. 314.
10. सुखदयाल सिंह, बंदा सिंह बहादुर आन दी कैनवास आफ सिख हिस्ट्री, अमरजीत सिंह द्वारा संपादित, बंदा सिंह बहादुर एंड हिज टाइम्स, निर्मल पब्लिशिंग हाउस, कुरुक्षेत्र, 2015, पेज नं। 99–100।



11. द न्यूज ऑफ द रॉयल मुगलकोर्ट, 1707–1718, गंडा सिंह द्वारा संपादित, द पंजाब पास्ट एंडप्रेजेंट, वॉल्यूम– XVIII&II, अक्टूबर 1984, पृष्ठ संख्या। 63.
12. अखबार–ए–दरबार–ए–मौला, मुजफ्फर आलम द्वारा उद्धृत, दी क्राईसिस आफ एम्पायर इन मुगल नार्थ इंडिया : अवध एंड दी पंजाब, 1707–48, पृष्ठ संख्या। 165.
13. रुक्कत–अमीन–उद–दौला, गंडा सिंह द्वारा उद्धृत, लाईफ आफ बंदा सिंह बहादुर : बेस्ड आन कंटेम्पेरी एंड आरिजनल रिकार्डस, प्रकाशन ब्यूरो, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, 1999, पृष्ठ संख्या। 161.
14. हरजिंदर सिंह दिलगीर, सिख हिस्ट्री, खंड 2, ग्रेटसिख जनरलबंदा सिंह बहादुर,... पेज नं. 41.
15. गंडा सिंह, लाइफ ऑफ बंदा सिंह बहादुर : बेस्ड आन कंटेम्पेरी एंड आरिजनल रिकार्डस, पृष्ठ संख्या. 59.
16. द न्यूज ऑफ द रॉयल मुगल कोर्ट, 1707–1718, गंडा सिंह द्वारा संपादित, पेज नं. 51.
17. हरजिंदर सिंह दिलगीर, सिख हिस्ट्री, खंड 2, ग्रेटसिख जनरलबंदा सिंह बहादुर,... पेज नं. 42.